

## "Indian perception of Dharm and Darshan"

“भारतीय संस्कृति में धर्म और दर्शन की अवधारणा” अपने शब्दों लिखें

भारतीय चिंतन परंपरा में धर्म और दर्शन दोनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। ये दोनों किसी एक ही सत्य या परम लक्ष्य की प्राप्ति के भिन्न-भिन्न मार्ग हैं – एक व्यवहारिक है तो दूसरा वैचारिक। भारतीय संस्कृति में इन्हें मानव जीवन के संतुलन और पूर्णता का मूल आधार माना गया है।

1. धर्म की भारतीय अवधारणा (Indian Perception of Dharma): जीवन का नैतिक और आध्यात्मिक आधार उत्पत्ति और अर्थ:

‘धर्म’ शब्द संस्कृत धातु ‘धृ’ से उत्पन्न हुआ है, जिसका भावार्थ है धारण करना या संभालना। धर्म वह सार्वभौमिक सिद्धांत है जो व्यक्ति, समाज और सृष्टि को एक सुव्यवस्थित ढांचे में बाँधता है। महर्षि कणाद के मत में धर्म वही है जिससे मनुष्य को सांसारिक (लौकिक) और आध्यात्मिक (पारलौकिक) कल्याण की प्राप्ति होती है।

भारतीय दृष्टिकोण:

भारतीय विचारधारा में धर्म किसी विशेष मजहब, पूजा-पद्धति या संप्रदाय का नाम नहीं, बल्कि यह एक नैतिक व्यवस्था है जो मानव जीवन को संयम, सदाचार और कर्तव्यनिष्ठा से परिपूर्ण बनाती है।

धर्म व्यक्ति को सत्य, अहिंसा, करुणा, क्षमा, दया और शांति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

यह केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं, बल्कि समाज में समरसता और न्याय की भावना स्थापित करता है।

धर्म का उद्देश्य:

धर्म का मूल लक्ष्य मनुष्य को दुख, असंतोष और अज्ञान से मुक्त कर आत्मिक पूर्णता और मोक्ष की ओर ले जाना है।

## 2. दर्शन की भारतीय अवधारणा (Indian Perception of Darshan) : सत्य का ज्ञान और तत्व की अनुभूति

अर्थ और स्वरूप: दर्शन दृश्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'देखना'। अतः 'दर्शन' शब्द का अर्थ है – सत्य का साक्षात्कार या तत्व का प्रत्यक्ष ज्ञान। यह केवल बौद्धिक जिज्ञासा नहीं, बल्कि आत्मा, प्रकृति और ईश्वर के संबंध को समझने का साधन है।

\* परिभाषा: दर्शन वह विद्या है जिसके द्वारा तत्व ज्ञान (परम सत्य का ज्ञान) प्राप्त हो सके।

भारतीय दृष्टिकोण:

भारतीय परंपरा में दर्शन को जीवन के दुखों से मुक्ति का मार्ग माना गया है। यह मानव के तर्क, अनुभव और आंतरिक चिंतन पर आधारित एक गहन विचार-प्रणाली है।

दर्शन का उद्देश्य केवल जानना नहीं, बल्कि जानकर मुक्त होना है।

यह मनुष्य के अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों – जैसे आत्मा, कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष – के समाधान प्रदान करता है।

मुख्य सिद्धांत:

दर्शन के आधारभूत तत्वों में कर्म के परिणामों पर विश्वास, पुनर्जन्म की स्वीकृति, आत्मा के अस्तित्व का प्रतिपादन और मोक्ष की सर्वोच्चता शामिल हैं।

### 3. धर्म और दर्शन का परस्पर संबंध

भारतीय परंपरा में धर्म और दर्शन को परस्पर पूरक माना गया है। दोनों एक ही सत्य की ओर बढ़ने वाले दो मार्ग हैं – एक जीवन के व्यावहारिक क्षेत्र में, दूसरा ज्ञान के बौद्धिक क्षेत्र में।

पहलू	धर्म	दर्शन
स्वरूप	व्यावहारिक और आध्यात्मिक	तात्त्विक और बौद्धिक
कार्य	व्यक्ति को सही आचरण की दिशा देता है	सत्य और तत्त्व का ज्ञान कराता है
परस्पर संबंध	दर्शन का व्यावहारिक रूप है	धर्म का वैचारिक आधार है
उद्देश्य	आस्था और कर्तव्य के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति	तर्क और ज्ञान के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति

निष्कर्ष:

भारतीय संस्कृति में दर्शन वह ज्ञानमार्ग है जो मनुष्य को सत्य की अनुभूति कराता है, जबकि धर्म उस सत्य को व्यवहार में उतारने का माध्यम बनता है। धर्म बिना दर्शन के अंधविश्वास बन सकता है और दर्शन बिना धर्म के केवल तर्कशास्त्र। इसलिए दोनों का समन्वय ही भारतीय जीवन-दृष्टि की आत्मा है – जहाँ ज्ञान और आचरण, दोनों मिलकर मनुष्य को परम कल्याण की ओर ले जाते हैं।